महात्मा गांधी के असहयोग, बहिष्कार कार्यक्रमों में महिलाओं का योगदान

डॉ0 सुधाकर लाल श्रीवास्तव*

महात्मा गांधी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में महिलाओं की भागीदारी के पूर्ण पक्षधर थे, उनके अनुसार जब महिलाएं सत्याग्रह आन्दोलन में शामिल होगी तभी पुरूष भी आन्दोलन में पूरा योगदान दे पायेगे और उन्होंने अपना विचार व्यक्त किया कि सत्य और अहिंसा के माध्यम से मानव विकास में स्त्रियाँ उचित स्थान प्राप्त कर लेगी तब उनके अन्दर से हीन भावना समाप्त हो जायेगी उन्होंने कहा कि महिला नेताओं का सीता, द्रौपदी और दमयन्ती की तरह सात्विक दृढ़ और नियंत्रित होना चाहिए, भारत के पुनरूत्थान में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। गांधी जी के व्यक्तित्व की विशेषता रही है कि वे न केवल महिलाओं में विश्वास जागने में सफल थे बल्कि महिलाओं के पुरूष संरक्षको, पति, पिता पुत्र और भाइयों का विश्वास भी उन्हं प्राप्त था अतः उन्होंने महिलाओं का आहवान किया कि वे कांग्रेस के कार्यक्रमों में सम्मिलित होकर स्वराज्य प्रति हेतु सहायता दें। महात्मा गांधी न केवल महिलाओं को राष्ट्रीय कार्यक्रमों से जोड़ा बल्कि उनके संघर्ष को राष्ट्रीय संघर्ष के साथ जोड़ दिया जिसमें महिलाओं की राष्ट्रीय भावना जागृत हुयी और वे गांधी के कार्यक्रमों से भविष्य के दिशा निर्देश प्राप्त कर अंग्रेजी सरकार तथा अन्यायपूर्ण विधि का विरोध एवं बहिष्कार के लिए तत्पर हो गयी।.....गांधी जी 1919 तक ब्रिटिश सरकार के साथ सहयोग कर रहे थे परन्तु 1920 तक वे ब्रिटिश सरकार का असहयोग करने लगे। इसका मुख्य कारण रौलेट एक्ट, पंजाब में की गई ज्यादतियाँ और खिलाफत के प्रति ब्रिटिश रवैय्या था।[1]

प्रथम विश्व युद्ध के बाद भारतीयों ने जो परेशानियाँ महसूस की उससे उत्तेजित होकर भारतीयों में राष्ट्रीयता की भावना जगी क्योंकि भारतीयों ने प्रथम विश्व युद्ध में धन, बल और वस्तुओं से जो सहयोग किया उससे उनको यह आशा थी कि अगर पूर्ण स्वराज्य का दर्जा नहीं तो कम से कम ब्रिटिश सरकार उन्हें स्वशासित राज्य का दर्जा अवश्य देगी।[2] किन्तु रौलेक्ट एक्ट ने उनकी आशाओं पर पानी फेर दिया। जिससे भारतीय जनता में ब्रिटिश सरकार के प्रति घोर अविश्वास पैदा हो गया। भारतीय जनता में व्याप्त इस असंतोष को गांधी जी ने अखिल भारतीय स्तर पर उठाने का जिम्मा लिया[3] और सितम्बर 1920 में कलकत्ता कांग्रेस के विशेष अधिवेशन में गांधी जी ने अहिंसात्मक असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव रखा। इस प्रस्ताव के साथ ही गांधी जी ने विधान परिषदीय चुनावों का बहिष्कार, उपाधियों एवं सम्मान का बहिष्कार तथा सरकारी विद्यालयों के बहिष्कार जैसे कार्यक्रम भी कांग्रेस के समक्ष प्रस्तुत किए।[4] इस अधिवेशन में असहयोग कार्यक्रम को लेकर मतभेद उत्पन्न हो गया। सी0आर0दास एवं कुछ अन्य कांग्रेसी नेताओं ने विधान परिषदीय चुनवों के बहिष्कार के प्रति असहमति व्यक्त की।

गांधी जी का मानना था कि जब तक ब्रिटिश सरकार खिलाफत एवं पंजाब सम्बन्धी गलतियों को स्वीकार नहीं कर लेती और स्वराज प्राप्त नहीं हो जाता तब तक असहयोग कार्यक्रम चलता रहेगा।[5] फलतः दिसम्बर 1920 में नागपुर कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में अंतिम रूप से असहयोग प्रस्ताव पास कर दिया गया। ब्रिटिश सरकार पूरे भारत वर्ष में असंतोषजनक साबित हुई इसलिए उनके द्वारा चलाए गए संस्थाओं को बन्द कर दिया गया तथा गांधी जी ने इनका बायकाट करने का आह्वान किया। महात्मा गांधी ने 'असहयोग कार्यक्रम' में नकारात्मक और सकारात्मक दोनों विचारधाराओं को अपनाया।[6] इनके नाकारात्मक विचारधाराओं में विधानसभाओं, न्यायालयों तथा सरकारी शैक्षणिक संस्थाओं का बहिष्कार करना, सरकारी पदवियों और उपाधियों का परित्याग करना, ब्रिटिश न्याय व्यवस्था में अविश्वास एवं ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार करना था।[7] असहयोग कार्यक्रम के सकारात्मक विचारधाराओं के अन्तर्गत स्वदेशी का प्रचार–प्रसार करना, सूत कातना, कपड़ा बुनना, हिन्दू–मुस्लिम एकता, छुआछूत का बहिष्कार, कांग्रेस में स्वयंसेवकों की भर्ती करना, चरखे एवं खादी का प्रचार–प्रसार करना, शराब बन्दी एवं ''तिलक फंड मेमोरियल'' (स्वराज फण्ड) के लिए एक करोड़ रूपये चन्दा एकत्रित करना था।

असहयोग कार्यक्रम के दौरान विदेशी सरकार द्वारा चलाए गए संस्थाओं को बन्द कर दिया गया

* **इतिहास विभाग, दी0द0उ0गो0वि0वि0, गोरखपुर**

तथा उनकी जगह पर देशी संस्थाएँ खोली गईं। विद्यार्थी और प्राध्यापक सरकारी स्कूलों एवं कालेजों को छोड़कर नए स्थापित देशी स्कूलों एवं कालेजों में जाने लगे। वकील एवं मुवक्किल दोनों ने सरकारी कोर्ट का बहिष्कार किया तथा ''प्राईवेट कानट्रैक्ट बोर्ड'' ज्वाइन किया। जिन्होंने आर्मी और पुलिस सर्विस से इस्तीफा दिया वे कांग्रेस और खिलाफत के स्वयंसेवक बन गए। जो व्यापारी विदेशी कपड़े बेचते थे, उन्होंने खादी वस्त्र तैयार कर बेचना शुरू कर दिया। इससे साम्राज्यवादी संस्थाओं को धक्का ही नही लगा बल्कि उनकी नैतिक साख भी बुरी तरह प्रभावित हुई।[8] गांधी जी यह महसूस करते थे कि असहयोग कार्यक्रम के उद्देश्यों को तब तक पूरी तरह प्राप्त नहीं किया जा सकता जब तक भारत की 50 प्रतिशत आबादी सम्मिलत नहीं होती है।

गांधी जी ने बम्बई में हुए एक बैठक में कहा कि भारतीय महिलाएँ पुरूषों के साथ संवैधानिक रूप से संघर्ष में सहयोग करें। जैसे मनुष्य के शरीर का आधा हिस्सा काम न करे तो कोई काम सुचारू रूप से नही हो सकता उसी प्रकार भारत रूपी शरीर भी सुचारू रूप से काम नहीं कर सकता यदि भारत की आधी आबादी सक्रिय नहीं होगी, इसलिए उन्होंने भारतीय महिलाओं से सत्याग्रह में भाग लेने की अपील की।[9] गाँधी जी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के राष्ट्रीय आन्दोलन में स्त्रियों को शामिल करने की नीति को भी लागू करने का निश्चय किया, उन्होंने विचार व्यक्त किया कि सत्य और अहिंसा के माध्यम से जब स्त्रियाँ मानव विकास में उचित स्थान पा लेंगी तब उनके अन्दर से हीन भावना समाप्त होगी। महिलाएँ भी जानती थी कि हमारे व्यक्तित्व और आवाज को प्रतिध्वनित कर हमारे शक्ति को महात्मा गाँधी ही मजबूत कर सकते हैं।

स्वदेशी आन्दोलन के रचनात्मक कार्यक्रम में महिलाएँ हिस्सा ले चुकी थीं। इससे उनके अन्दर राष्ट्रीय भावना न केवल जागृत हुई बल्कि इन कार्यक्रमों से उन्हें भविष्य के दिशा–निर्देश भी प्राप्त हुए, अतः वे अंग्रेजी सरकार तथा उनके अन्यायपूर्ण विधि का विरोध एवं शांतिपूर्वक मुकाबला करने को तत्पर हुई। वे ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार, सूत कातना, खादी कपड़े बुनना, शराब की दुकानों पर धरना देना आदि कार्यक्रमों में शामिल हो चुकी थीं। अतः असहयोग कार्यक्रम में महात्मा गाँधी ने भी महिलाओं को शामिल करने का निश्चय किया और उनके संघर्ष को राष्ट्रीय संघर्ष के साथ जोड़ दिया। 1920 में देश के राजनैतिक वातावरण में स्वतंत्र भारत की भावना जन चेतना में प्रबल हो रही थी। गाँधी जी ने महिलाओं से कहा कि वे कांग्रेस के असहयोग कार्यक्रमों में सम्मिलित होकर पूर्ण जागरूकता से स्वराज्य प्राप्ति के लिए सहयोग दें। गाँधी जी से प्रभावित देश के विभिन्न प्रान्तों की महिलाओं ने बड़ी संख्या में जिम्मेदारी के साथ आगे बढ़कर असहयोग आन्दोलन में भाग लेना शुरू किया। महिलाएँ जुलूसों एवं बैठकों में भाग लेने लगीं। उन्होंने प्रभातफेरियों में भाग लिया तथा चरखा एवं खादी का प्रचार–प्रसार किया। बड़ी संख्या में युवतियों ने सरकारी कालेज एवं स्कूलों को छोड़कर जुलूसों में भाग लिया तथा गिरफ्तारियाँ दीं। जैसे–जैसे आन्दोलन बढ़ता गया यह साफ हो गया कि महिलाएँ प्रखर रूप से एवं दृढ़ इच्छा शक्ति से महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

महिलाओं ने संघर्ष की प्रकृति को समझा तथा स्वराज्य प्राप्ति के लिए आभूषणों का दान दिया। विभिन्न धर्म एवं जाति की महिलाएँ घरों से बाहर निकलने लगीं। वे गम्भीर परिस्थितियों में भी धैर्य एवं साहस से डटीं रहीं। वे बैठकों एवं संगोष्ठियों में प्रेरणादायक गाने गातीं।[10] पंजाब में ''सरला देवी चौधरानी'' ने असहयोग कार्यक्रम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने विभिन्न बैठकों एवं संगोष्ठियों का आयोजन किया तथा उसे सम्बोधित किया। उन्होंने चरखा चलाना सीखा तथा पूर्ण रूप से खादी को स्वीकार कर लिया। वे समारोहों में भी खादी वस्त्र ही पहनकर जाती। यहाँ तक उन्होंने एक पत्र में गांधी जी को लिखा कि उनके भाषण से ज्यादा उनकी खद्दर साड़ी लोगों को प्रेरित करती है।[11] सरला देवी चौधरानी ने स्वराज्य प्राप्ति के लिए अपने कीमती आभूषणों का ही त्याग नहीं किया बल्कि उन्होंने अपना पहला ''पद्मावती स्वर्ण पदक'' जो उन्हें कलकत्ता विश्वविद्यालय से प्राप्त हुआ था, वापस कर दिया।[12] उन्होंने ''भारत स्त्री महामण्डल'' का संगठन किया। वे महिलाओं को देश के प्रति उनके अधिकारों एवं कर्त्तव्यों के लिए प्रेरित करतीं, वे उन्हें चरखों से सूत कातने, खादी से बने वस्त्र तथा खद्दर साड़ी पहनने के लिए भी प्रोत्साहित करतीं। पंजाब के अमृतसर और लुधियाना में महिलाओं के लिए सरला देवी ने चरखा कातने की संस्था खोली जिसमें शहर की प्रतिष्ठित महिलाएँ भी आती थीं। सरला देवी

चौधरानी के अलावा 'राधा देवी','पार्वती देवी', 'लाडो रानी', 'जुत्शी' और 'मनमोहिनी सहगल' ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। उन्होंने विदेशी कपड़ों का बहिष्कार किया तथा आमजन बैठकों के अन्त में विदेशी कपड़ों की होलिका जलायी।

'ट्रिब्यून' में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार करनाल में खादी की प्रदर्शनी लगाई गई और खादी तैयार करने वालों को पुरस्कृत किया गया। यह और भी महत्वपूर्ण है कि लगभग 3000 महिलाएँ खादी धारण किए हुए मुल्तान की सड़कों पर बैलगाड़ी में खादी लादकर पदयात्रा कर खादी बेच रही थीं।[13] शादी के समारोहों और सामाजिक उत्सवों में खादी आम बात हो गई थी और बहुत से मौकों पर दुल्हा और दुल्हन के कपड़े भी शुद्ध सफेद खादी के होते थे और दान दक्षिणा में दी जाने वाली वस्तुएँ भी स्वदेशी होती थीं।[14] लाहौर में जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा संगठित जुलूसों में महिलाओं ने भाग लेना शुरू किया तो 'लाडो रानी जुत्शी' ने स्वयंसेवकों की नियुक्ति की जो महिलाओं के पीछे चलता था। दिसम्बर 1921 में अहमदाबाद में हुए कांग्रेस अधिवेशन में पंजाब से 17 महिला प्रतिनिधि आयीं, जो देश के किसी भी राज्य से आए प्रतिनिधियों में बड़ी संख्या थी।[15]

गुजरात की 'शारदा मेहता' और 'इंदुलाल याज्ञनिक' ने गाँधी जी के अखबार ''नवजीवन'' के प्रकाशन में सहायता की।[16] चम्पाबेन मेहता','सीरीन मेहता','अनुसूइया बेन साराबाई' ने भी असहयोग कार्यक्रमों के अन्तर्गत गुजरात में विशिष्ट भूमिका निभायी। महिलाओं ने संगठित होकर शराब की दुकानों पर पिकेटिंग की तथा सहर्ष जेल भी गयीं। गुजरात में कांग्रेस से जुड़ी महिलाओं ने जर्नल प्रकाशित करना शुरू किया। इन्होंने अनेक संगठनों की भी स्थापना की जिनमें से प्रमुख ''गुजराती हिन्दू स्त्री महामण्डल'', सेवा सदन (सूरत), द बिनीता विश्राम (सूरत और अहमदाबाद), भगिनी समाज (अमरौली और राजकोट) और महारानी चिमना बाई उद्योगालय (बड़ोदा) आदि था।[17] गाँधी जी, 'कस्तूरबा', 'अनुसूइया बेन' और आश्रम की अन्य बहनों के साथ गाँव–गाँव जाकर महिलाओं को सम्बोधित करते, वे उन्हें चरखा चलाने, खादी पहनने, सरकारी शिक्षा संस्थानों का बहिष्कार करने, छूआछूत को मिटाने तथा हिन्दू–मुस्लिम एकता को बढ़ाने का संदेश देते रहते। गाँधी जी के उपदेशों का रचनात्मक प्रभाव पड़ा तथा बहुत सी महिला विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूलों और कालेजों को छोड़कर गाँधी जी का साथ देना शुरू किया जिनमें 'मणिबेन पटेल', 'मिस देसाई' प्रमुख थीं। 'गंगाबेन मजूमदार' ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। यह गंगाबेन ही थीं जिन्होंने सूत कातने का चरखा खोजा तथा खादी आंदोलन की पहली संगठनकर्त्ता रहीं।[18]

गुजरात में महिलाओं की जागरूकता का अंदाजा इस बात से ही लगाया जा सकता है कि दिसम्बर 1921 में अहमदाबाद में हुए कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में इतिहास में पहली बार महिलाओं ने स्वयंसेवक के रूप में कार्य किया एवं 'नन्दूबेन कनूगा' के नेतृत्व में 131 स्वयं सेविकाओं ने अधिवेशन में भाग लिया।[19] बम्बई की महिलाएँ भी असहयोग आंदोलन में अग्रणी रहीं। राजनीति संगठन, बैठक और विचार–विमर्श में बम्बई के प्रत्येक भाग की महिलाओं ने हिस्सा लिया। उन्होंने 'राष्ट्रीय स्त्री सभा','हिन्द महिला समाज','भगिनी समाज','शारदा समाज' और 'सरस्वती महिला समाज' की स्थापना की जिससे कि स्वदेशी के प्रचार–प्रसार और राष्ट्रीय कार्यक्रमों को आगे बढ़ाया जाए।[20]

बम्बई की महिलाओं ने स्वराज कोष के लिए धन एकत्रित करने में सर्वाधिक योगदान दिया जिसका एक उदाहरण 'श्रीमती मजरूल हक' का मिलता है जिन्होंने राष्ट्रीय हित के लिए अपने हीरे के चार कंगन स्वराज कोष में दान कर दिये।[21] कमला देवी चट्टोपाध्याय ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से 'स्वराज कोष' के लिए चन्दा एकत्रित किया। इसी प्रकार जब कांग्रेस द्वारा 6 से 13 अप्रैल को सत्याग्रह सप्ताह' के रूप में मानने की घोषणा की गई तो इस अवधि के दौरान श्रीमती नायडू ने बम्बई में बड़ी संख्या में सभाओं का आयोजन किया और महिलाओं को आन्दोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। इन्होंने अपने 'कैसर–ए–हिन्द' की उपाधि भी वापस कर दी। सत्याग्रह के अन्तिम दिन लगभग 500 से भी अधिक महिलाएँ भाषण सुनने सभा में उपस्थित हुईं, जो महिलाओं की उत्सुकता का प्रमाण है।[22] असहयोग कार्यक्रम के दौरान मुस्लिम महिलाओं में 'बेगम मुहम्मद अली' का नाम आता है जिन्होंने आन्दोलन के प्रचार–प्रसार के लिए विभिन्न जगहों की यात्रा की तथा हिन्दू–मुस्लिम एकता को बढ़ावा दिया। नवम्बर 1921 में 'प्रिन्स आफ वेल्स' के भारत आगमन के विरोध में बम्बई की महिलाओं ने जुलूस

निकाला जिनमें 'सरोजिनी नायडू','अवन्तिका बाई गोखले','मिसेज–जयकर', 'हंसा मेहता', 'गंगाबाई पटेल' तथा 'तेमीना जोशी' प्रमुख थीं।[23] इस प्रकार बम्बई में 'गोशीबेन कैप्टन','जैजी जहाँगीर','बेगम नाजिल राफिया','पेरिन कैप्टन','फैजी बहने', 'मनेकाबाई बहादुरजी', तैय्यबजी के परिवार की महिलाओं ने असहयोग आंदोलन में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। बंगाल की महिलाओं ने 'नारी कर्म मंदिर','महिला कर्म समाज' और 'महिला संगठन बोर्ड' जैसे संगठनों की स्थापना किया।[24] इसके माध्यम से असहयोग आंदोलन का प्रचार–प्रसार कर इसके कार्यक्रमों में हिस्सा लिया।

सी0आर0 दास की धर्मपत्नी 'बासंती देवी','उर्मिला देवी' एवं 'सुनीती देवी' ने 'नारी कर्म मंदिर' का संगठन किया। इन्होंने कलकत्ता के प्रत्येक भाग का दौरा किया एवं खद्दर बेचा जिसके कारण इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इनके साथ 'सुनीति बाला मित्तर' (अनुकूल मित्तर की पत्नी), 'बांग्ला सोम' (सुर्य सोम की पत्नी), 'सत्यादेवी','उमासी देवी' और आठ सिक्ख महिलाओं को गिरफ्तार किया गया।[25] बंगाल की ही 'ज्योतिर्मयी गांगुली' ने अध्यापन कार्य छोड़कर स्वयं सेवकों का संगठन बनाया तथा असहयोग आंदोलन का प्रचार–प्रसार किया। इसके अलावा नलिनी सेन गुप्त ने भी असहयोग कार्यक्रमों को बखूबी संचालित किया। जिसके कारण इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।[26] इनके अलावा 'हेमप्रभा मजूमदार','इन्द्रप्रभा मजूमदार','राधूबीबी','रेणुका राय','तारूलता भट्टाचार्या' आदि महिलाओं ने असहयोग आंदोलन में हिस्सा लिया। बिहार की महिलाओं ने भी खादी व चरखे का प्रचार–प्रसार किया एवं अधिक से अधिक सोने–चांदी के आभूषणों का दान किया। इन्होंने विदेशी कपड़ों एवं शराब की दुकानों पर धरना दिया। बिहार की प्रमुख महिला 'सवित्री देवी' ने अनेक सभाओं का आयोजन किया जिसमें वे विदेशी कपड़ों एवं शराब की दुकानों पर धरना देने के लिए जनता को प्रेरित करतीं।[27] इसके अलावा 'लीला सिंह' (दीप नारायण सिंह की पत्नी) ने जनता से अपील की कि वे स्वयंसेवक के रूप में अपना ज्यादा से ज्यादा नामांकन करायें। 'कृष्ण कुमारी देवी' ने पर्दा त्याग कर राष्ट्रहित में अनेक जनसभा को सम्बोन्धित किया। 'सरला देवी', 'विन्धवासिनी देवी','प्रियमवदा नंदक्यूलियार', 'जुबैदा बेगम दाऊदी' आदि महिलाओं ने असहयोग आंदोलन में भाग लिया 'बाई अमन' ने दरभंगा से 60000 रूपये एवं मुंगेर से 20000 रूपये एकत्रित किए।[28] उत्तर प्रदेश में असहयोग आंदोलन के दौरान इलाहाबाद एवं लखनऊ की महिलाएँ सर्वाधिक सक्रिय रही, जिनमें नेहरू परिवार की सभी महिलाएं थीं। 'स्वरूपकुमारी नेहरू','कमला नेहरू','विजय लक्ष्मी पंडित','उमा नेहरू' एवं 'रामेश्वरी नेहरू' सभी ने आंदोलन में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। रामेश्वरी नेहरू ने 'स्त्री दर्पण' के माध्यम से महिलाओं में राष्ट्रीय चेतना जागृत किया। उनकी लेखों का व्यापक असर हुआ एवं अनेक महिलाओं ने आंदोलन में हिस्सा लिया एवं आगे आयी।[29]

'सुभद्रा कुमारी चौहान' अपने पति के साथ मिलकर 'कर्मवीर' नामक पत्रिका का सम्पादन किया, जिसमें राष्ट्रवादी कविताएँ प्रकाशित होती थीं। लखनऊ की 'अनवरी बेगम' ने शहर के विभिन्न भागों में विदेशी कपड़ों एवं शराब की दुकानों पर धरना दिया।[30] इस दौरान उत्तर प्रदेश में अनेक महिला संगठन बने जिनमें –'महिला स्वराज्य सभा (कानपुर),'स्त्री समाज' (अलीगढ़),'स्त्री मण्डल' (लखनऊ) आदि प्रमुख थे। असहयोग कार्यक्रम के दौरान दिल्ली की महिलाओं ने भी अग्रणी भूमिका निभाई। दिल्ली की 'सत्यवती देवी' (श्रद्धानन्द की पौत्री) ने असहयोग आंदोलन के दौरान अपने समस्त आभूषण दान कर दिए एवं महिलाओं को संगठित कर शराब और विदेशी कपड़ों की दुकानों पर धरना दिया। दिल्ली की ही 'मैमोबाई' स्वदेशी कार्यक्रम में निरंतर भाग लेने के कारण 18 बार जेल गई।[31] इनके साथ 'वेद कुमारी' भी थी जो श्रद्धानन्द की दूसरी पौत्री थीं। 'नलिनी सेन गुप्त' ने दिल्ली में बहुत सी सभाओं का आयोजन किया। आसफ अली की माता 'अकबरी बेगम' ने असहयोग आंदोलन में भाग लेकर मुस्लिम महिलाओं से निवेदन किया कि वे अपनी धर्म की रक्षा के लिए असहयोग आंदोलन का सहयोग करें।[32] दक्षिण भारत की महिलाओं में इल्लौर की 'अन्नपूर्णा देवी' ने शादी में प्राप्त सारे गहने दान कर दिए एवं सम्पूर्ण जीवन खादी धारण करने का व्रत लिया।[33]

मद्रास की 'सुभामा देवी' ने आंदोलन में उत्साहपूर्वक भाग लिया। विदेशी कपड़ों की दुकानों पर धरना दिया एवं दुकानदारों से खादी वस्त्र बेचने की अपील की। इनकी राजनीतिक गतिविधियों के कारण इन्हें गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।[34] आन्ध्रप्रदेश के गोदावरी जिले की 'दुर्गाबाई' 12 साल की उम्र से ही राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने लगी। उन्होंने देवदासियों की समस्याओं के निवारण के लिए

अथक प्रयास किया। 'श्रीमती एस0 अम्बुजम्मल' अहिंसा पर आधारित आंदोलन के कार्यक्रमों में निरंतर भाग लेती रहीं। इन्होंन अनेक सभाओं और जुलूसों का संचालन किया एवं शराब की दुकानों पर धरना दिया। मोहम्मद अली की पत्नी 'अमजदी बानों' ने भी आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई एवं महिलाओं से अपील की कि प्रतिदिन सूत काते और आजादी प्राप्त करने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहे।[35] उड़ीसा में 'हेमवती देवी' द्वारा आयोजित सभा को गांधी जी ने सम्बोधित किया एवं असयोग आंदोलन में वहाँ की महिलाओं का सहयोग मांगा जिसका सकारात्मक प्रभाव पड़ा और बहुत सी महिलाएं आंदोलन में भाग लेने के लिए कूद पड़ी। 'रामादेवी चौधरी' ने 'सरला देवी' एवं कुछ अन्य महिलाओं के साथ मिलकर 6 अप्रैल से 13 अप्रैल तक उपवास रखा। वे 'पद्मावती देवी' एवं 'हिरामनी देवी' के साथ गया में हुए कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में सम्मिलित हुईं। इसके अलावा शराब की दुकान पर धरना दिया एवं विदेशी कपड़ो की होली जलाई।[36] उड़ीसा की ही 'कुन्तला कुमारी साबत' ने भी विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर जगह–जगह बैठकों एवं जुलूसों का आयोजन किया।

असहयोग, कार्यक्रम के दौरान असम की महिलाएँ भी पीछे नहीं रहीं। उन्होंने भी स्वयं सेवक के रूप में अपना नामांकन कराया एवं अनेक बैठकें आयोजित कर विदेशी कपड़ों की होली जलाई। गुवाहाटी में 'मिसेज कोताती' ने देशभक्त फूक्कन के लॉज में बैठक आयोजित की तथा आंदोलन में भाग लेने के लिए महिलाओं को प्रेरित किया। गुवाहाटी में ही 'मिसेज एन0के0 बरूआ' के प्रतिनिधित्व में जो बैठक आयोजित हुई उसमें 60 महिलाओं ने स्वयं सेवक के रूप में नामांकन करवाया। वे जगह–जगह घूमकर खादी का प्रचार करतीं एवं उन्होंने खादी पहनने एवं सूत कातने का संकल्प लिया। असम की सक्रिय महिलाओं में 'गिरिजा देवी', 'हेमता कुमारी', 'ग्यान देवी' और 'धोरमेंदा सुन्दरी देवी' आदि प्रमुख थीं। असहयोग कार्यक्रम में भारत के लगभग सभी प्रान्तों में महिलाओं ने सहभागिता दी। राष्ट्रभक्ति और आशाओं से ओतप्रोत होकर महिलाएं आगे आईं और निःसंदेह देश की आजादी के संघर्ष में सक्रिय हो गयीं। वे मात्र बैठकें और जुलूस तक ही सीमित नहीं रहीं बल्कि वीरता एवं साहसपूर्वक पुलिस के अत्याचारों का भी सामना किया।

ग्रामीण क्षेत्र की अशिक्षित महिलाओं की भूमिका को भी नजर अंदाज नहीं किया जा सकता, जिन्होंने प्रत्यक्ष/परोक्ष रूप से आंदोलन में सहयोग दिया और घरों में रहकर चरखों से सूत काता। महिलाओं के सत्याग्रह में शामिल होने के कारण आंदोलन को नई शक्ति मिली एवं महिलायें भी राष्ट्रीय जागरूकता के कारण स्वतंत्रता संघर्ष में सक्रियता से जुड़ीं। पहली बार विभिन्न जाति,धर्म की महिलाएँ भारी संख्या में गांधी जी के असहयोग कार्यक्रम से जुड़ी। महिलाओं की उत्तरोत्तर संख्या वृद्धि का प्रमाण है कि 1921 में कांग्रेस सम्मेलन में 145 महिला प्रतिनिधियों ने भाग लिया जिसमें 131 महिलाएँ स्वैच्छिक कार्यकत्री थीं और 14 महिलाएँ विभिन्न समितियों से आयी थीं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. भारती ठाकुर : वुमेन इन गांधीज् मॉस मूवमेंट : दीप एण्ड दीप पब्लिकेशन,नई दिल्ली, पृ0– 38
2. पूर्वोक्त : पृ0–38
3. ताराचन्द : भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास, खण्ड–3 प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, पृ0–546
4. शेखर बंद्योपाध्याय : प्लासी से विभाजन तक, आधुनिक भारत का इतिहास, ओरिएंट ब्लैकस्वॉन प्राईवेट लिमिटेड 2009, पृ0–326
5. पूर्वोक्त : पृ0–326
6. ताराचन्द : पूर्वोक्त– पृ0–565
7. यंग इण्डिया : 15 सितम्बर 1920
8. सुजैन एण्ड लायड रूडल्फ : गांधी : दि ट्रेडिशनल रूट्स ऑफ कैरिश्मा, ओरिएंट लौंगमैन, दिल्ली, 1987, पृ0–31
9. स्पीच एट लेडीज प्रोटेस्ट मीटिंग, बाम्बे : 6 अप्रैल 1919, CWMG, Vol-XV, पृ0–189
10. 1919 के अमृतसर कांग्रेस वार्षिक अधिवेशन में पहली बार सरला देवी चौधरानी द्वारा लयबद्ध प्रस्तुत किया गया, जिसको रामभुज दत्त चौधरी द्वारा लिखा गया।

11. लेटर टू गांधी फ्राम सरला देवी : 3 मई 1920, कलेक्टेड वर्क आफ महात्मा गांधी Vol-XVII, पृ0– 429
12. सुखबीर चौधरी : इंडियन पीपुल फाइट फार नेशनल लिबरेशन 1920–22, श्रीजानी प्रकाशन, दिल्ली, 1972 पृ0–85
13. दि ट्रिब्यून : 1 अक्टूबर 1921 एवं 21 जनवरी 1922
14 A.I.C.C Papers, Reports of the work done by the congress in Punjab in 1922, Part-II Page-145.
15. एच0एन0 मित्रा : (ed) द इण्डियन एनुअल रजिस्टर 1921–22 Vol-I Appendix I, P-12-13
16. उषा बाला : इंडियन वुमेन फ्रीडम फाईटर्स– 1857–1947, मनोहर प्रकाशन, दिल्ली, 1986 पृ0–87
17. सीरीन मेहता : इण्डियन हिस्टोरिकल रिव्यू, पृ0–165
18. (i) एम.के. गांधी : एन आटोबायोग्राफी पृ0–372–73 एवं
(ii) इलिनोर मारटन : वुमेन बिहाइंड महात्मा गांधी, Max Reinharat, London, 1954, P-107
19. ए0एम0 जैदी एण्ड एस0जी0 जैदी : दि इन्साईक्लोपीडीया ऑफ दि इंण्डियन नेशनल कांग्रेस Vol-8 एस. चन्द एण्ड को, दिल्ली, पृ0–25 एण्ड C.W.M.G., Vol-XXII, P-185-86.
20. हिन्द महिला समाज 50th एनिवर्सरी रिपोर्ट, 1918–1968, फिफ्टी इयर टेल आफ ग्रोथ, सरस्वती महिला समाज एनुअल रिपोर्ट बाम्बे, 1967 पृ0–411–17
21. कलेक्टेड वर्क्स आफ महात्मा गांधी, Vol-XX, पृ0–397
22. अनुप तनेजा : गांधी वुमेन एण्ड द नेशनल मूवमेन्ट (1920–47), हरआनन्द पब्लिकेशन प्रा0लि0 2005 पृ0–105
23. साधना आर्य, निवेदिता, जिनी लोकनीता : नारीवादी राजनीतिक संघर्ष एवं मुद्दे, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय 2001 पृ0–158 एवं भारती ठाकुर : पूर्वोक्त, पृ0–48–49
24. भारती ठाकुर : पूर्वोक्त, पृ0– 41
25. अमृत बाजार पत्रिका : 10 जनवरी, 1992
26. सुशीला नैय्यर एवं कमला मनकेकर (सं0) भारतीय पुनर्जागरण में अग्रणी महिलाएं, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2011 पृ0–164
27. भारती ठाकुर : पूर्वोक्त, पृ0–60
28. अमृत बाजार पत्रिका : 5 फरवरी 1922
29. लीला कस्तूरी एवं बीना मजूमदार (सं0) वुमेन एण्ड इण्डियन नेशनलिज्म, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1994 पृ0–30
30. दि इण्डियन क्वार्टर्ली रजिस्टर, Vol-I, जनवरी 1921–मार्च, 1922, पृ0–55
31. होम डिपार्टमेन्ट पोलिटिकल फाईल नं0 38–41– II –129, राष्ट्रीय अभिलेखगार, नई दिल्ली।
32. गेल मिनाल्ट : दि रोल ऑफ मुस्लिम वुमेन इन इंण्डियन नेशनलिज्म– 1911–24 पृ0–253
33. यंग इण्डिया : 13 अप्रैल 1921, CWMG-Vol-XIX पृ0–143
34. उषा बाला, वुमेन फ्रीडम फाइटर, मनोहर पब्लिकेशन, 1986, पृ0–107
35. यंग इण्डिया : 29 सितम्बर 1921
36. आर0सी0 मजूमदार : हिस्ट्री आफ फ्रीडम मूवमेन्ट इन इण्डिया (कलकत्ता : फरमा के0एल0 मुखोपाध्याय), Vol-III, 1988 पृ0–178